Date - 14-05-2020

Dr. Sanehlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Conception of Jagat: Vedanta

Scanned with CamScanner

जगत्- विचार

शंकराचार्य अपने ग्रंथों में बार-बार यह उद्घोष करते हैं कि "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" अर्थात् ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

शंकर सत्कार्यवाद के एक रूप ब्रह्म-विवर्तवाद में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार जगत् ब्रह्म का विवर्त है, वास्तविक परिणाम नहीं है। मायायुक्त ब्रह्म इस जगत् का निमित्त एवं उपादान कारण दोनों है। माया के कारण ही यह ब्रह्म प्रपञ्चात्मक जगत के रूप में आभासित होता है। पारमार्थिक दृष्टि से केवल ब्रह्म की वास्तविक सत्ता है, जगत मिथ्या है।

जगत के मिथ्यात्व को स्पष्ट करने के लिए शंकर-दर्शन के अनेक कथन दिखाई देते हैं -

(1) "सदसद्विलक्षणत्वं मिथ्यात्वम्"
अर्थात् जो सत् और असत् दोनों से भिन्न है वह मिथ्या है।

(2) "ज्ञान निवर्त्यत्वं मिथ्यात्वम्"
अर्थात् जो ज्ञान से बाधित होता है, वह मिथ्या है।

(3) "त्रिकाला बाध्यत्वं लक्षण सत्"
अर्थात् जिसका तीनों कालों में बाध नहीं हो वह सत् है। पारमार्थिक दृष्टि से जगत का बाध हो जाता है।

(4) "सत् विविक्तत्वं मिथ्यात्वम्" अर्थात् जो सत् से भिन्न है वह मिथ्या है।

Scanned with CamScanner

जगत के मिथ्यात्व के समर्थन में तर्क :

(i) जगत के पदार्थों में सदा विकार अर्थात् परिवर्तन आता रहता है। जो विकारयुक्त होता है वह पदार्थ अपने स्वरूप को खो देता है। परिवर्तनशील जगत को सत न मानकर मिथ्या मानना पड़ता है।

(ii) जाग्रत - अनुभव और स्वप्न ज्ञान की वस्तुएँ दृश्य हैं। जो दृश्य है वह मिथ्या है। जैसे - स्वप्न की वस्तुएँ। जो दृश्य है उसका मूल कारण अविद्या है।

(iii) शंकर सामान्यतोदृष्ट अनुमान के आधार पर भी जगत के मिथ्यात्व का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं।

(iv.) शंकर विवर्तवाद के आधार पर शंकर के मिथ्यात्व को स्थापित करते हैं। शंकर के अनुसार जगत ब्रह्म का वास्तविक परिणाम नहीं है बल्कि उसका विवर्त मात्र है। यह जगत वस्तुतः न तो उत्पन्न होता है और न ही विकसित होता है। यह केवल प्रतीत होता है।

(v) जगत सत और असत से विलक्षण मिथ्या है। जगत सत नहीं है क्योंकि ब्रह्म ज्ञान से इसका बाध हो जाता है। जगत असत भी नहीं है क्योंकि उसका अनुभव किया जाता है। इस प्रकार सत - असत के आधार पर देखने से जगत का मिथ्यात्व स्पष्ट होता है।

Scanned with CamScanner

अद्वैतवेदान्त के भाष्यकार स्वामी विद्यारण्य ने अपने 'पंचदशी' में जगत् के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया है-

(i) जगत पारमार्थिक दृष्टि से असत् है।

(ii) जगत् व्यवहारिक दृष्टि से सत् है।

(iii) जगत् तार्किक दृष्टि से अनिर्वचनीय है।

शंकर के इस जगत्-विचार पर निम्नलिखित आक्षेप लगाए जाते हैं-

(i) रामानुज शंकर के जगत विचार को शंकर के मस्तिष्क की कपोल कल्पना मात्र बताते हैं। उनका विचार उपनिषद् वाक्य होने के कारण मान्य नहीं है।

Scanned with CamScanner